मेहेर मेहेर गाता जा

- मधुसूदन पुण्ड

दोहा: मन के सागर में कुंडलिनी घूम रही है इधरउधर

देव दनुज तेरे मस्तिष्कके खोजत है सुख अमर अमर

सुन्दर रत्न देख ललचाते और भयानकता का डर

अचरज तो है इन सबका रे, तेरा मस्तिष्कही है घर

लगी है चारो और अगन रे , पागल ना भरमाता जा

मेहेर मेहेर गाता जा || मेहेर ||

आज हो रहा सागर मंथन, मानव खोज रहा अमृतधन

लेकिन निकला जो ही हलाहल, पुकारता प्रभु अब आजा || मेहेर ||

अच्छा बुरा सब तुझमे है, जब वो प्रकटे गुणावगुण है

सबके पीछे सत्य छिपा है, अपना अंतर धोता जा || मेहेर ||

लाख यतन जायेंगे खाली, मैहर नाम होगा रखवाली

ये नाही कुछ बात निराली, माया में नही खोता जा || मेहेर ||

शुरू हुवा है शिवतांडव रे, धरती अंबर डगमग डोले

मधुसूदन जागो जागो रे, तू इसमे नही बहता जा || मेहेर ||